शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण जनजीवन की कारुणिक त्रासदी
('मंत्र', 'दुःख का अधिकार' और 'मेरा ख़ुदा' कहानी के सन्दर्भ में)

कु.चाँदनी गोले (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य मनुष्य की संवेदनाओं और मुनष्यता के उदात्त मूल्यों का वाहक है। साहित्य सबको साथ लेकर चलता है। साहित्य मन का अंधकार मिटाने वाली मशाल है॥ साहित्य रूपी दर्पण में एक ओर मनुष्य के दर्प से चूर स्वरूप को प्रतिबिम्बित किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर कुछ आदर्श एवं मर्मस्पर्शी पहलुओं को भी इस दर्पण में बखूबी निहारा जा सकता है। ग्रामीण जन-जीवन के बीच आज भी मानवीयता एवं इंसानियत के कई जीवित रूप देखे जा सकते हैं। ग्रामीण समुदाय को भारतवर्ष की उस लघु इकाई के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें आत्मनिर्भरता, हम की भावना, जनसंख्या की समरूपता, कर्तव्यबोध, प्रकृति से निकटता, सरलता आदि विशेषताएँ पाई जाती हैं।"2 ग्रामीण जन मानवीय संवदेना के रक्षक कहे जा सकते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में मानवीय संवेदना के रक्षक ग्रामीण जन जीवन की त्रासदी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

साहित्यकार एक समय -सृष्टा की भूमिका का निर्वहन करता है। वह अपनी लेखनी के माध्यम से शहरी एवं ग्रामीण, उच्च एवं निम्न, अमीर एवं गरीब हर तबके के जनमानस का सम्यक् चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। कथा कहना और सुनना मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। कथा आपबीती और परबीती हो सकती है और ऐसी भी हो सकती है, जो न तो आपबीती हो और न ही परबीती बावजूद इसके आप स्वयं को उस कथा के केन्द्र में पाते हैं, तो यह आभास ही कथा का सत्य है, जो वास्तविकता के रूप को कल्पना के रूप से सज्जित कर रंजक बना देता है। वास्तविक कथा को परिभाषित करते हुए डॉ. विनयमोहन शर्मा कहते हैं कथा यदि आदि से अन्त तक हमें उलझाए रख सकती हैं - हमें अपने में खींचे रख सकती है , तो वह सचमुच कथा है।"3

'कहानी' पाठक वर्ग पर प्रभाव छोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण विधा कही जा सकती है। जहाँ एक ओर कहानीकारों ने शहरी जीवन के चित्रों को कहानी में उकेरा है वहीं दूसरी ओर ग्रामीण जीवन की विविधता भी कहानियों में स्पष्टतः देखी जा सकती है। कहानी में ग्रामीण जीवन की बात की जाए और प्रेमचन्द का उल्लेख न हो , ऐसा कतई सम्भव नहीं। डॉ.रामविलास शर्मा के अनुसार, "प्रेमचन्द की कहानियाँ केवल मनोरंजन के उद्देश्य से ही नहीं लिखी गई। उन सभी में कोई न कोई सुझाव , जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण, किसी समस्या का हल जरूर मिलता है। प्रेमचन्द का मानवीय पक्ष बहुत ही विकसित था, इसलिए भारत के दलित , शोषित, भारतीय

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अशिक्षित किसान तथा पीड़ित मजदूरों की व्यथा उनकी कहानियों में अभिव्यक्त हुई है।"4

इसी तरह यशपाल , प्रेमचन्द के सच्चे उत्तराधिकारी ही नहीं बल्कि प्रेमचन्द के बाद हिन्दी के सबसे बड़े कथाकार और चिन्तक भी रहें हैं। "यशपाल का सम्पूर्ण साहित्य जड़ता , जर्जर सामर्थ्य और पूँजीवादी सभ्यता और संस्कृति के विरूद्ध सर्वहारा वर्ग की विजय की घोषणा करता हुआ भारतीय समाज और जीवन को नई आस्था से भरने का प्रयास करता है। यशपाल के कथा साहित्य में अनेक जीवन्त पात्र मज़दूर है।"5

इसी प्रकार डॉ.अमित गोयल ने भी अपनी कहानियों में ग्रामीण जनजीवन की सरलता व सहजता को अपनी कलम से बखूबी चित्रित करने का प्रयास किया है। नगरीय समाज की अपेक्षा ग्रामीण समाज में रिश्तों की अहमियत , मानवीय संवेदना, कर्तव्यबोध, स्वावलम्बन, प्रकृति से निकटता व सरलता एवं सहजता कई गुना अधिक होती है , यह तथ्य निर्विवाद है। आज मनुष्य अपनी स्वार्थपरता के वशीभूत हो येन-केन-प्रकारेण अपना मन्तव्य सिद्ध करना चाहता है, भले ही उसके द्वारा ऐसा करने से किसी का अहित ही क्यों न होता हो।

कहानियों में कारुणिक त्रासदी

नित प्रति हो रहे नैतिक मूल्यों के पतन के फलस्वरूप मनुष्य अपनी संवेदनाएँ व अपने कर्तव्यों को दरकिनार कर अपना हित सर्वोपरि रखता है, यह स्थिति प्रेमचन्द कृत 'मंत्र', यशपाल द्वारा रचित 'दुःख का अधिकार ' और डॉ.अमित गोयल कृत 'मेरा ख़ुदा ' शीर्षक कहानियों में स्पष्टतः परिलक्षित होती है।

प्रेमचन्द कृत 'मंत्र' शीर्षक कहानी में शाम के समय भगत नामक एक वृद्ध अपने बीमार बेटे को इलाज हेतु डॉ..चड्ढा के पास लेकर आता है और डाक्टर उसका इलाज इस समय करने से यह कहकर मना कर देते हैं कि कल सवेरे आना, हम इस वक्त मरीजों को नहीं देखते , यह हमारे खेलने का समय है। बूढ़े द्वारा लाख मिन्नतों के बाद भी जब डाक्टर नहीं मानते हैं , तो बूढ़े ने अपनी पगड़ी, जो उसके मान-सम्मान का प्रतीक होती है, उतारकर चौखट पर रख दी और रोकर बोला - " हुजूर! एक निगाह देख लें। बस एक निगाह। लड़का हाथ से चला जाएगा हुजूर! सात लड़कों में यही एक बचा रहा है हुजूर। ..दया कीजिए बड़ा दीन-हीन दुःखी हूँ , संसार में कोई और नहीं है बाबूजी।"6

आज हम समाज के जिस पढ़े-लिखे वर्ग को सभ्यता व शालीनता रूपी आभूषणों से सुसज्जित मानते हैं, उनकी वास्तविकता से परिचित हो बूढ़ा भगत असमंजस की स्थिति में पड़ जाता है। संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं , जो अपने आमोद-प्रमोद के आगे किसी की जान की भी परवा नहीं करते , शायद इसका उसे अब भी विश्वास न आया था। "सभ्य संसार इतना निर्मम, इतना कठोर है , इसका ऐसा मर्मभेदी अनुभव अब तक उसे न हुआ था। वह उन पुराने जमाने के जीवों में था , जो लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दों को कंधा देने , किसी के छप्पर को उठाने और किसी के कलह हो शांत करने के लिए सदैव तैयार रहते थे।"7 अन्ततः वह बेटे को लेकर वापस घर चला जाता है और उसी रात को उसका हँसता-खेलता बालक अपनी जीवन-लीला समाप्त कर संसार से चला जाता है।

कहते हैं परिस्थितियाँ बदलते देर नहीं लगती। एक दिन डा . चड्ढा के इकलौते बेटे कैलाशनाथ की बीसवीं सालगिरह बड़ी ही धूमधाम से मनाने हेतु मेहमानों का जमावड़ा लगा है और अचानक

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कैलाशनाथ को उसी के द्वारा पाले हुए सांप ने काट लिया। कुछ समय पूर्व खुशी का जो सुरम्य वातावरण था वह दूसरे ही क्षण मातम में तब्दील हो जाता है। ग्रामीण जन प्रकृति के बेहद निकट होते हैं और अनेक जड़ी-बूटियों के ज्ञाता भी, उन्हीं में से एक वह बूढ़ा भगत भी था। जब भी भगत सांप काटने की खबर पाता , वह तुरंत वहाँ पहुँच जाता पर आज डा .चड्ढा के दुःख को जानने के बाद भी वह पहले तो खुद को कठोर बनाकर न जाने का निर्णय लेता है परन्तु "मन में प्रतिकार था, पर कर्म मन के अधीन न था , जिसने कभी तलवार न चलाई, वह इरादा करने पर भी तलवार नहीं चला सकता। उसके हाथ कांपते हैं , उठते ही नहीं।"8 और अन्ततः वह अपनी नींद को दरकिनार करते हुए डा .चड्ढा के बेटे को बचाने पहुँच जाता है और अपने प्रयासों में सफल भी हो जाता है। बिना किसी एहसान के वहाँ से लौट आता है। इस प्रकार डा .चड्ढा की स्मृति ताजा होती है और वे ग्लानि से भर जाते हैं। अपने असंवेदनशील व्यवहार का पश्चाताप करते हुए कहते हैं , "मैं अब उसे खोज निकालूँगा और उसके पैरों में गिरकर अपना अपराध क्षमा कराऊँगा। वह कुछ लेगा नहीं , यह जानता हूँ , उसका जन्म यश की वर्षा करने के लिए हुआ है। उसकी सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिया है, जो अब से जीवन पर्यन्त मेरे सामने रहेगा।"9

इस प्रकार सर्वसाधन सम्पन्न होने के बावजूद डा.चड्ढा उस बूढ़े भगत की संवेदना व इंसानियत रूपी अमूल्य आभूषण का खुद में अभाव महसूस कर रहे थे और वह बूढ़ा भगत अपने कर्मों पर विजय प्राप्त कर , खुद को हमेशा की तरह एक बार फिर संसार के सबसे धनवान व्यक्ति के रूप में महिमामण्डित कर रहा था। यह है ग्रामीण जन की असली दौलत जो दूसरों के काम आकर खुद को गौरवान्वित महसूस करते हैं , उनका यह आत्मीय व्यवहार आज के धन-दौलत से सम्भ्रांत व स्वार्थी मनुष्य की मानवीयता के संकीर्ण दायरे पर प्रश्नचिह्न लगाती है।

प्रेमचन्द के उत्तराधिकारी यशपाल कृत 'दुःख का अधिकार' शीर्षक कहानी में भी ग्रामीण जनजीवन की कारूणिक त्रासदी की झलक स्पष्टतः देखी जा सकती है। इस कहानी में आज के समाज उस वर्ग की संवेदनहीनता व अनैतिकता चित्रित की गई है , जो एक ओर तो खुद को समाज का ठेकेदार व खुद को बहुत ही सभ्य व संस्कारित कहते हैं, किन्तु जब बात आती है कर्तव्य पालन की, दूसरों के प्रति अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन की, तो वे इन सब से किनारा कर लेने में तनिक भी संकोच नहीं करते। और तो और ये अपनी संवेदनशीलता को छिपाने हेतु कई बार धार्मिक-मान्यताओं और परम्पराओं का लबादा ओढ़ लेते हैं।

ग्रामीण जन अपनी आजीविका हेतु कृषि पर निर्भर करते हैं और इसी के चलते उन्हें दो जून की रोटी नसीब हो पाती है। इस कहानी में एक बुढ़िया जो बाजार में , फुटपाथ पर कुछ खरबूजे डलिया में और कुछ जमीन पर रखकर बिक्री हेतु लाई है , परन्तु सिर पर चादर लपेटे , सिर को घुटनों पर टिकाए फफक-फफककर वह रो रही थी। यह दृश्य देख उसके रोने का कारण जान , उसे दिलासा देना तो दूर रहा , पड़ोस की दुकानों के तख़्त पर बैठे और बाजार में खड़े लोग उसके प्रति घृणासूचक भाव लिए बात करते हुए कहते हैं, "क्या जमाना आ गया है। जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है। " एक अन्य साहब कहते हैं , "अरे जैसी नीयत होती है , अल्ला भी वैसी ही बरकत देते हैं। "10 कहते हैं ' हाथी के पाँव में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सबका पाँव', फुटपाथ पर खड़ा एक आदमी यह सब सुन अपना सुर अलापते हुए कहता है, "अरे, इन लोगों का क्या है ? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी... धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।"11 समाज के ऐसे लोगों को मानवीय संवेदनाओं का हत्यारा कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी। रात-दिन अपने धर्म की दुहाई देते फिरते हैं और परचून की दुकान पर बैठे लाला जी जिन्होंने न जाने कितने गरीबों की मेहनत की कमाई को छीना होगा, कहते हैं, "अरे भाई, उनके लिए मरे-जिए का कोई मतलब न हो पर दूसरे के धर्म-ईमान का तो ख्याल करना चाहिए। हजार आदमी आते जाते हैं। कोई क्या जानता है, इसके घर में सूतक है। कोई इसके खरबूजे खा ले तो उसका ईमान-धरम कैसा रहेगा? क्या अंधेर है।"12 जिस बुढ़िया के बारे में समाज व धर्म का ठेकेदार कहने वाले लोग तरह-तरह की बातें करतें हैं क्या वे यह नहीं जानते कि उसका इकलौता जवान बेटा सर्प के काट लेने से चल बसा और उस बुढ़िया की जर्जर आर्थिक स्थिति उसे दुःखी होने का अधिकार भी छीन लेती है। कहते हैं मरने वाले के साथ मरा नहीं जाता। बेटे की मृत्यु के बाद 'कफन' की व्यवस्था और बीमार बहू के लिए दवाई का इंतजाम करना बेहद मुश्किल था और बुढ़िया के पास खरबूजे बेचने के अलावा दूसरा चारा नहीं था। कहा जाता है , "गरीब की बीमारी उसकी मौत से ज़्यादा भारी होती है।"13 कहानी में एक दृश्य ऐसा भी है जहाँ एक सभ्रान्त परिवार के बेटे की मृत्यु हो जाने पर उसकी माँ ढाई महीने तक पलंग से नीचे नहीं उतर पाती है और अनेक डाक्टर उसकी देखभाल के लिए तैनात हैं। यही नहीं शहर भर के लोग उसके पुत्र शोक में शामिल होते हैं। एक तरफ वह बूढ़ी माँ , जिससे पुत्र वियोग में दुःखी होकर रोने पर यह समाज के लोग उसे कई तरह के ताने मारते हैं। ऐसी स्थिति में सवाल उठता है कि सम्भ्रान्त परिवार की माँ का दुःख वास्तविक दुःख है और एक गरीब माँ का पुत्र वियोग केवल और केवल ताने और उलाहना का पात्र है, यह कैसा समाज है, जो उस बुढ़िया को स्वयं के दुःख का अधिकार भी छिनने में लगी है या सभी सुख-सुविधाओं की तरह दुःख पर भी केवल और केवल संभ्रान्त वर्ग का ही अधिकार होता है ? यह प्रश्न विचारणीय है।

डा.अमित गोयल कृत 'मेरा ख़ुदा' शीर्षक कहानी में उन्होंने एक ऐसे ही गाँव का चित्रण किया है जहाँ धर्म-सम्प्रदाय मज़हब से बड़ा रिश्ता है आत्मीयता का, संवेदनशीलता का और एक-दूसरे के मान-सम्मान का। यह कहानी एक गरीब बालक 'धीरू' के कलेक्टर धीरेन्द्र यादव 'साहब' बनने तक की यात्रा। जिसमें धीरू अपनी माँ के द्वारा पढ़ने जाने के लिए किराए के रूप में दिए गए पैसे बचाकर दूध बेचने वाले बाबा कमरूद्दीन की साइकिल पर बैठ स्कूल जाने की और जब एक दिन बाबा कमरूद्दीन ने मजाक में बच्चे से पूछा, "क्यूं रे धीरू तेरी अम्मी तुझे बस के पैसे देती हैं ना , फिर तू क्यूं मुझे थकाता है ? अरे चाचा, किताब के पैसे नहीं देती अम्मा। पैसे बचाऊँगा तभी तो आगे पढ़ पाऊँगा ना , धीरू ने कहा था। कमरूद्दीन ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा था , खूब पढ़ना। बेटा कलेक्टर बनना और खुरदिया गाँव का नाम रोशन करना।"14

कुछ वर्षों बाद जब कमरूद्दीन को पता चलता है, कि धीरू कलेक्टर धीरेन्द्र यादव 'साहब' बन गया है, से अपने बेटे जो ऐसे जुर्म में जेल में बंद था, जो उसने किया ही नहीं था और उसे छुड़वाने के

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लिए थानेदार पचास हजार कि माँग करता है , के सम्बन्ध में बात करने हेतु मिलने जाना चाहता है परन्तु डर है , इतना बड़ा आदमी हो गया , कुछ याद भी होगा या नहीं क्योंकि "आस टूटने का डर भी किसी मौत से कम नहीं होता। " परन्तु उसकी ये सारी शंकाएँ दूर हो जाती हैं क्योंकि कलेक्टर धीरेन्द्र यादव साहब, की तरह नहीं उनसे बचपन में साइकिल के पीछे बैठने वाले धीरू की तरह ही पूरी आत्मीयता के साथ मिलता है और उसकी समस्या के समाधान के विषय में कहता है, "मैं खुद चलता हूँ आपके साथ। आइए , गाड़ी में चलते हैं। आपकी साइकिल जितनी मज़ेदार तो नहीं पर फिर भी काम की है , कहकर वह हँसने लगा।"15

कमरूद्दीन के हाथ दुआ में ऊपर उठ जाते हैं और वह सोचने लगा , "ऐ ख़ुदा! तू कितनी बार मेरी साइकिल पर बैठा, पर मैं तुझे आज पहचान पाया हूँ।"16

निष्कर्ष

आधुनिकता के इस युग में खोती हुई संवेदनशीलता, आत्मीयता, साम्प्रदायिक सद्भाव व निःस्वार्थता का समाधान समाज के प्रत्येक व्यक्ति के पास है शर्त है उस शक्ति को पहचानने की। क्योंकि ईश्वर ने मानव को रचा है जो बुद्धियुक्त , विवेकशील प्राणी है परिस्थितियों को वह अपना दास बना सकता है वह परिस्थितियों का दास बनकर रह जाए, यह उसके अस्तित्व को कटघरे में खड़ा करती है। इसीलिए मानव-मात्र के प्रति प्रेम , त्याग, करूणा, दया व समर्पण का भाव रखते हुए अपने इंसान होने का परिचय देने का प्रयास करना चाहिए न कि जिन लोगों में यह संवेदना आज जिंदा है , उन्हें कमतर साबित करने का।

इस प्रकार प्रेमचन्द कृत 'मंत्र', यशपाल कृत 'दुःख का अधिकार ' और डॉ.अमित गोयल कृत 'मेरा ख़ुदा' शीर्षक कहानियाँ मानवीय संवेदना का संरक्षण करती हुई साहित्य जगत में तो अपनी पहचान कायम किए हुए है ही , साथ ही ये कहानियाँ अपने कथ्य और प्रभाव की व्यापकता व उद्देश्यपूर्णता की दृष्टि से आज भी सन्दर्भित व प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 अक्षरा - साहित्य की द्वैमासिकी, कैलाशचन्द्र पन्त, सित-अक्टू.2009, पृष्ठ 40
2 भारत में ग्रामीण समाज, डा डी.एस.बघेल, पृष्ठ 57
3 साहित्यान्वेषण, डा.विनयमोहन शर्मा, पृष्ठ 44
4 प्रेमचन्द और उनका युग , डा.रामविलास शर्मा, पृष्ठ 112
5 मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र और हिन्दी उपन्यास , कुँवरपाल सिंह, पृष्ठ 73-74
6 मानसरोवर, प्रेमचन्द, पृष्ठ 402
7 मानसरोवर, प्रेमचन्द, पृष्ठ 402
8 मानसरोवर, प्रेमचन्द, पृष्ठ 402
9 वही
10 दुःख का अधिकार, यशपाल
11 दुःख का अधिकार, यशपाल
12 दुःख का अधिकार, यशपाल
13 मेरा ख़ुदा, डा.अमित गोयल
14 मेरा ख़ुदा, डा.अमित गोयल
15 मेरा ख़ुदा, डा.अमित गोयल
16 मेरा ख़ुदा, डा.अमित गोयल